बिस्मिल्लाह-हिर-रहमानिर-रहीम

मेरे रब मुझे बदनामी से बचा

ज़बूर 25

या अल्लाह, मैं अपने आपको तेरे हवाले करता हूँ।[1]

ए मेरे रब, मैं तुझ पर भरोसा करता हूँ, तू मुझे बदनाम नहीं होने देना।
मेरे दुश्मनों को मुझ पर हंसने का मौक़ा न देना।[2]

जो कोई भी तुझ पर ईमान रखेगा वो कभी बदनाम नहीं होगा।
वही बदनाम होगा जो सिर्फ़ गुनाह करता है और कभी तौबा नहीं करता।[3]

या अल्लाह रब्बुल करीम, मुझे नेक रास्ता दिखा।
मुझे ज़िन्दगी को जीना सिखा।[4]

मुझे अपनी सच्ची हिदायत अता कर, ए मेरे परवरदिगार,
मुझे निजात देने वाले, मैं तेरी हिदायत का इंतज़ार करूँगा।[5]

ए मेरे परवरदिगार, तू अपनी मोहब्बत और करम याद कर।
जो तूने हम पर बहुत पहले ज़ाहिर किया था।[6]

मेरे गुनाहों और ग़लत काम को याद न करना जो मैंने जवानी में किए थे।
लेकिन मुझे प्यार करना हमेशा याद रखना, क्यूँकि तू बेहतरीन है, ए मेरे रब।[7]

या अल्लाह रब्बुल अज़ीम, तू अच्छा और सच्चा है।
तू गुनाहगारों को सच की तरफ़ ले जाता है।[8]

तू उनको ही सही रास्ता दिखाता है, जो सही काम करने पर ग़ुरूर नहीं करते।
तू उनको अपना सीधा रास्ता दिखाता है।[9]

ए मेरे रब, तेरा रास्ता प्यारा और सच्चा है
उनके लिए जो तुझसे किए हुए वादे पर अमल करते हैं।[10]
ए मेरे रब, अपने नाम की ख़ातिर, मेरे गुनाहों को बख़्श दे।[11]

अल्लाह रब्बुल अज़ीम अपनी इबादत करने वाले बन्दों को
बेहतरीन रास्ते पर ले जाएगा।[12]
वो एक बेहतरीन ज़िन्दगी जिएगा और उसके बच्चे ज़मीन के वारिस होंगे।[13]

अल्लाह ताअला अपने राज़ उसे बताएगा जो उसकी इज़्ज़त करते हैं।
वो उन्हें अपने अहद के बारे में बताएगा।[14]

मेरी आँखें हमेशा तुझे मदद के लिए तलाश करती हैं।
तू मुझे हर जाल से बचा लेगा।[15]

मेरी तरफ़ देख और मुझ पर नज़रे करम कर।
मैं अकेला हूँ और बहुत तकलीफ़ में हूँ।[16]

मेरी मुश्किलें बहुत बढ़ गई हैं।
मुझको मेरी मुश्किलों से आज़ाद कर दे।[17]

देख मैं कैसे मुसीबतों में फंसा हुआ हूँ,
तू मेरे सारे गुनाहों को माफ़ कर दे।[18]

देख मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं!
और देख वो मुझसे कितनी नफ़रत करते हैं![19]

मेरी हिफ़ाज़त कर और मुझे बचा ले।
मैं तुझ पर भरोसा करता हूँ, मुझे बदनाम होने से बचा ले।[20]

मैं तुझसे ही उम्मीद रखता हूँ
ताकि नेकी और ईमानदारी मेरी हिफ़ाज़त कर सके।[21]

या अल्लाह, तू मेरे मुल्क को हर मुश्किल से महफ़ूज़ रख।[22]